بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **29.05.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को अपने इस दुनिया से जाने के दुःखद समाचार के साथ यह शुभ सूचना भी दी थी और फ़रमाया था कि आदि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों का नाश करके दिखा दे। तो इस प्रकार अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी पुरानी सुन्नत को छोड़ देवे। फ़रमाया- तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का देखना भी आवश्यक है तथा उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्यूंकि वह स्थाई है जिसका क्रम प्रलय तक नहीं टूटेगा।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह फ़रमाया कि तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी, उस समय तक जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर उसके बाद ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वत (नबुव्वत की आधीन ख़िलाफ़त) स्थापित होगी, जो नबी के मार्ग पर चलने वाली होगी। उसके निजि स्वार्थ नहीं होंगे, वह नबी के काम को आगे बढ़ाने वाली होगी। लेकिन कुछ समय के पश्चात यह ख़िलाफ़त, जो ख़िलाफ़त-ए-राशिदा (सत्यमार्गी ख़िलाफ़त) है, समाप्त हो जाएगी। यह वरदान तुमसे छीन लिया जाएगा, फिर एक ऐसी बादशाहत स्थापित हो जाएगी जिसमें लोग तंगी अनुभव करेंगे, फिर उससे भी बढ़कर अत्याचारी राज होगा। फिर अल्लाह तआला की दया जोश में आएगी तथा पुनः नबुव्वत के मार्ग पर चलने वाली ख़िलाफ़त स्थापित होगी। हम देखते हैं कि इसके बावजूद कि इस्लाम के इतिहास में विभिन्न युगों में आने वाले मुसलमान राजा अपने आपको ख़लीफ़ः कहलाते रहे, यह बताते रहे कि उनका स्तर ख़लीफ़ः के स्तर के समान है। परन्तु इसके बावजूद मुसलमानों की अधिकतर संज्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आपके जो चार ख़लीफ़ः हैं, उनको ही सत्यमार्गी ख़लीफ़ः का स्तर देती है, उन्हीं का दौर ख़िलाफ़त राशिदा का दौर कहलाता है। वंशानुगत राज्य नहीं रहे बल्कि मोमिनों की जमाअत के द्वारा अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त का चोला उन्हें पहनाया। लेकिन उनके अतिरिक्त शेष ख़लीफ़ः वंशानुगत राज्य को ही चलाते रहे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी आपके शब्दानुसार पूरी हुई। जब पहली दो बातों में यह भविष्य वाणी पूरी हुई तो जो अन्तिम बात आपने बयान फ़रमाई उसमें भी हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन ने पूरा होना था कि इस दुनियादारी तथा मुसलमानों के बिगड़े हुए हालात को देखकर वह ख़ुदा जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़यामत तक सुरक्षित रहने वाली शरीअत के साथ भेजा था, उसकी दया जोश में आती और नबुव्वत के मार्ग वाली ख़िलाफ़त को दुनिया में पुनः स्थापित फ़रमाता। और हम अहमदी यह विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किए गए वादे के अनुसार मसीह मौऊद और महदी मअहूद के द्वारा नबी के पद चिन्हों पर ख़िलाफ़त को क़ायम फ़रमाया। आपको जहाँ उम्मती नबी होने का स्तर प्रदान किया वहीं ख़ातमुल ख़ुल्फ़ा (सर्वोत्तम ख़लीफ़ः) के स्तर से भी प्रतिष्ठित किया कि अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ाओं का क्रम, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक तथा ख़ातमुल ख़ुलफ़ा के द्वारा ही जारी होना है। अतः हम भाग्य शाली हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस शुभ सूचना से लाभान्वित होने वालों में शामिल हैं जो आपने हमें ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वत (नबुव्वत के अनुसार ख़िलाफ़त) की स्थापना के लिए फ़रमाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरः जुम्अः की आयत وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ की व्याज्या करते हुए, जिसमें बाद में आने वालों को पहलों के संग मिलाया था, उनमें हम शामिल हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने जिस प्यारे के बारे में फ़रमाया था कि वह ईमान को सुरय्या ग्रह से धरती पर ले आएगा, हमें उसके मानने वालों में सम्मिलित फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस मसीह व मेहदी को अपना सलाम पहुंचाने के लिए कहा था, हमें अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी कि यह कर्त्तव्य निभाने वालों में शामिल हों। और फिर अहमदिय्या जमाअत की बैअत करने वालों पर यह भी अल्लाह तआला की कृपा हुई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा आपके बाद जारी ख़िलाफ़त के सिलसिले की बैअत करने वालों में भी शामिल फ़रमाया।

अतः अल्लाह तआला के ये सारे उपकार हर अहमदी से चाहते हैं कि उसका शुक्रगुज़ार बनते हुए अपनी स्थिति में वह बदलाव लाएँ जो अल्लाह तआला के मानने वालों का कर्त्तव्य है, तभी इस बैअत का हक़ अदा कर सकेंगे। मसीह मौऊद और मेहदी मअहूद ने ईमान को सुरय्या ग्रह से पृथ्वी पर लाना था तथा अपने मानने वालों के दिलों को इसके द्वारा भरना था और हर अहमदी निःसन्देह इस बात का साक्षी है कि आपने यह काम करके दिखाया। लेकिन इस ईमान का क़ायम करना केवल आपके जीवन तक ही सीमित नहीं था अथवा कुछ दशकों तक ही सीमित नहीं था बल्कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वत (नबुव्वत के सत्य मार्ग पर ख़िलाफ़त) की शुभ सूचना देकर ख़ामोशी धारण की तो फिर इसका अर्थ था कि इस ईमान को प्रलय तक धरती पर वैभव के साथ स्थापित रहना है तथा प्रत्येक वह व्यक्ति जो अपनी गणना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने वालों के साथ करता है, उसका दायित्व है कि इस ईमान को अपने दिलों में बिठाकर सदैव इस पर दृढ़ रहे। यह उन मानने वालों का कर्त्तव्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपके बताए हुए मार्ग के अनुसार चलने वाले ख़िलाफ़त के निज़ाम के साथ जुड़कर उस ईमान को प्रदर्शित करते हुए इस दुनिया के कोने कोने में फैलाएँ और एकेश्वरवाद को दुनिया में स्थापित करें और इसी कारण से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को अपने इस दुनिया से जाने के दुःखद समाचार के साथ यह शुभ समाचार भी दिया था और फ़रमाया था कि आदि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों का सर्वनाश करके दिखा दे। तो इस प्रकार अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी पुरानी सुन्नत को छोड़ देवे। फ़रमाया- तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का देखना भी आवश्यक है तथा उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्यूंकि वह स्थाई है जिसका क्रम क़यामत तक नहीं टूटेगा।

अतः ईमान को धरती पर स्थापित करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद उस दूसरी क़ुदरत को जारी फ़रमाया और हम सब अच्छी प्रकार जानते हैं कि यह दूसरी क़ुदरत निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है। इस प्रकार ख़िलाफ़त के निज़ाम का दीन की उन्नति के साथ एक महत्व पूर्ण सम्बंध है और इस्लाम की शरीअत का यह एक महत्व पूर्ण अंग है। दीन की प्रगति ख़िलाफ़त के बिना हो ही नहीं सकती। जमाअत की एकता ख़िलाफ़त के अभाव में स्थापित रह ही नहीं सकती और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हम में से हर एक जो ख़िलाफ़त से सम्बंधित है, इस बात से भली भांति परिचित है कि ख़िलाफ़त का जमाअत में जारी रहना ईमान का अंश है। यह अल्लाह तआला का शुक्र है कि उन लोगों के बलिदान के कारण, उन लोगों के ईमान की व्यापकता के कारण, आज हम में से अनेक नौजवान जो उन बुज़ुर्गों की पीढ़ियों में से हैं, निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के फ़ैज़ से लाभान्वित हो रहे हैं। इस विषय में सबसे बढ़कर प्रयास एंव बलिदान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पर आरोप लगाने वालों ने बड़े बड़े आक्षेप किए, लेकिन ख़िलाफ़त के निज़ाम को बचाने के लिए जो आपके मन की स्थिति, उसकी एक झलक मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के शब्दों में आपके सम्मुख रखता हूँ, क्यूंकि यह भी इतिहास का ही एक भाग है और विध्वंस से बचने के लिए हमें इतिहास पर भी नज़र रखनी चाहिए। इसी प्रकार ईमान में दृढ़ता का भी साधन प्राप्त होता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह फ़रमाते हैं कि-

जहाँ ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम ने मृत्यु प्राप्त की थी, मैंने मौलवी मुहम्मद अली साहब को बुलाकर कहा कि ख़िलाफ़त के विषय में कोई झगड़ा पेश न करें कि होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए और अपने विचारों को केवल इस सीमा तक रखें कि ऐसा ख़लीफ़ः नियुक्त हो जिसके हाथ में जमाअत के उद्देश्य सुरक्षित हों और जो इस्लाम की उन्नति का प्रयास कर सके। मैंने मौलवी साहब से कहा कि जहाँ तक व्यक्तिगत विचार धारा का प्रश्न है मैं अपनी भावनाओं को आपके लिए क़ुर्बान कर सकता हूँ परन्तु यदि नियम का प्रश्न आया तो मजबूरी होगी क्यूँकि नियम का छोड़ना किसी स्थिति में भी उचित नहीं। हमारे और आपके बीच यही अन्तर है कि हम ख़िलाफ़त को एक धार्मिक आवश्यकता समझते हैं तथा ख़िलाफ़त के अस्तित्व को अनिवार्य मानते हैं। परन्तु आप ख़िलाफ़त के अस्तित्व को उनुचित नहीं कह सकते क्यूंकि अभी अभी एक ख़लीफ़ः की बैअत से आपको स्वतंत्रता मिली है। कहा कि- छः साल तक आपने बैअत किए रखी और हमें हमारे धर्म तथा नियम के विरुद्ध विवश न करें। शेष रहा यह प्रश्न कि जमाअत की प्रगति तथा इस्लाम की स्थापना के लिए कौन लाभदायक हो सकता है, तो जिस व्यक्ति पर आप सहमत होंगे, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने हज़रत मौलवी मुहम्मद साहब को कहा, कि जिस व्यक्ति पर आप सहमत होंगे उसे हम ख़लीफः मान लेंगे। इस प्रकार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह फ़रमाते हैं कि मौलवी साहब को मैंने कहा कि आपकी शंकाएँ मैंने दूर कर दी हैं इस लिए अब आपके सामने यह सवाल होना चाहिए कि ख़लीफ़ः कौन हो, यह नहीं कि ख़लीफ़ः नहीं होना चाहिए। इस पर मौलवी साहब ने कहा कि मैं जानता हूँ इस लिए आप ज़ोर दे रहे हैं कि आपको पता है कि ख़लीफ़ः कौन होगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उनसे कहा कि मुझे तो नहीं पता कि कौन होगा? ख़लीफ़ः सानी ने फ़रमाया कि- मैं उसकी बैअत कर लूँगा जिसे आप चुनेंगे। अर्थात मौलवी मुहम्मद अली साहब, क्यूंकि जब मैं आपके द्वारा चुने हुए की बैअत कर लूँगा तो फिर ख़िलाफ़त पर सहमत अर्थात ख़िलाफ़त का समर्थन करने वाले मेरी बात मानते हैं, शंका का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न हो सकता। परन्तु मौलवी साहब ने न मानना था, न माने। फिर थोड़ी देर पश्चात जब द्वार खोला गया, बाहर निकले तो मौलवी मुहम्मद अहसन साहब

अमरोही ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह द्वित्तीय ने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद का नाम पेश किया और जमाअत ने मजबूर किया कि आप बैअत लें। और इस प्रकार इस दूसरी क़ुदरत के स्थापित होने में यह जो द्वेष रखने वालों ने कठिनाई डालने का प्रयास किया था उसे अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात को पूरा करते हुए असफल व निराश कर दिया और ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्वः (नबुव्वत के मार्ग पर ख़िलाफ़त) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बाद दूसरी बार फिर स्थापित फ़रमा दी और जो ख़िलाफ़त से दूर हटे हुए थे, वे बड़े दीन के आलिम भी थे, दुनिया के आलिम भी थे, पढ़े लिखे भी थे, अनुभव वाले भी थे, मान सज़्ज़ान एंव समृद्धि वाले भी थे। अंजुमन के सारे ख़ज़ाने को भी अपने अधिकार में लिए हुए थे परन्तु असफल तथा हताश होते गए, वे लोग। मौलवी साहब, द्वित्तीय ख़िलाफ़त के चयन के पश्चात न केवल वहाँ से चले गए, क़ादियान से, बल्कि उन बैअत न करने वालों ने ख़िलाफ़त के निज़ाम को नष्ट करने के लिए बाद में भी बड़े विद्रोह जारी रखे परन्तु सदैव असफलता का मुंह देखना पड़ा और आज इस बात को 101 वर्ष हो गए हैं परन्तु अत्यधिक कठिन प्रस्थितियों के होते हुए क़ादियान प्रगति कर रहा है।

अतः यह समर्थन है अल्लाह तआला का अहमदी ख़िलाफ़त के संग, जिसके दृश्य हम प्रतिदिन देख रहे हैं। जर्मनी भी इन बरकतों से वंचित नहीं है जो अहमदिया ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने वाले लोगों को अल्लाह तआला पहुंचा रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व जर्मनी जमाअत की दो निज़ तंज़ीमों, अन्सारुल्लाह और लजना इमाअल्लाह ने मिल कर पाँच मंज़िल का एक भवन ख़रीदा जो एक दश्मलव सात मिलयन अथवा सत्तर लाख योरो का ख़रीदा गया। वह ख़ज़ाना जिसमें ख़िलाफ़त के विरोधियों ने एक रुपए से भी कम पैसे छोड़े थे और हंसते थे कि अब देखें किस प्रकार निज़ाम चलेगा, उस ख़िलाफ़त से सम्बंधित आज एक देश के दो निज़ संगठनों ने एक भव्य पाँच मंज़िल का भवन लगभग उन्नीस करोड़ से भी अधिक मूल्य व्यय करके ख़रीदा। अब यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और अहमदिया ख़िलाफ़त का समर्थन नहीं है तो और क्या है? जो ख़िलाफ़त से अलग हुए उनका केन्द्रीय प्रबन्धन भी नष्ट भ्रष्ट हो गया। कुछ घटनाएं आश्चर्य जनक होती हैं कि किस प्रकार अल्लाह तआला लोगों को जमाअत की सच्चाई के साथ, ख़िलाफ़त के साथ अपने समर्थन एंव सहायता के विषय में भी बताता है। केवल अहमदिया जमाअत का सत्य ही नहीं अपितु ख़िलाफ़त के साथ सहायता एंव समर्थन भी, जो अल्लाह तआला दिखा रहा है, वह भी अन्य लोगों को दिखाता है और इस प्रकार पवित्र आत्माओं के सीने खोलता है। एक दो घटनाओं का मैं यहाँ वर्णन कर देता हूँ।

नाइजेरिया अफ़्रीक़ा का एक देश है वहाँ हमारे मुबल्लिग़ ने लिखा है कि नई बैअत करने वालों की तर्बियत की क्लास में दस इमाम साहिबान के साथ साथ एक गाँव के चीफ़ भी आ गए। जब उनसे पूछा गया कि आप इमाम के साथ क्यूँ आ गए हैं, यह क्लास तो इमाम साहिबान की ट्रेनिंग के लिए है तो उन्होंने बताया कि मैं जानता हूँ कि यह इमामों की क्लास है परन्तु कल रात जब मैंने इमाम साहब को क्लास में शामिल होने का पैग़ाम दिया तो उसने इंकार कर दिया और बताया कि मुझे नगर के सुन्नी आलिम जो वहाबी थे, उन्होंने बताया कि अहमदी काफ़िर हैं। यह कहते हैं चीफ़ कि- मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ तथा दुःख भी हुआ कि अहमदी काफ़िर कैसे हो सकते हैं और यह कि यदि ये काफ़िर हैं तो इनको गाँव में तबलीग़ करने की अनुमति तो मैंने दी है, चीफ़ के अधिकार से। इस लिए मैं तो दोगुना काफ़िर हो गया। इस लिए रात को मैंने बहुत दुआ की और अल्लाह तआला से मार्ग दर्शन की दुआ करते करते सो गया। रात को मैंने सपने में देखा कि पहले मेरे घर में आकाश से तारे उतर आए तथा फिर उनके पीछे पीछे चाँद। मैं उनको पास से देख रहा हूँ परन्तु उनमें रोशनी नहीं है और फिर सहसा आकाश से एक सफ़ैद कपड़ों वाला व्यक्तित्व मेरे घर में उतरता है और उसके घर में आते ही तारे और चाँद आश्चर्य जनक रूप से प्रकाश्मयी हो गए तथा पूरा घर प्रकाश से चगमगा उठा और मेरे दिल में यह बात दृढ़ता से आ गई कि यह तो अहमदियों का कोई व्यक्तित्व है और मैं आगे बढ़कर उससे सवाल करता हूँ कि क्या आप अहमदियों के मुरब्बी हैं अथवा ख़लीफ़ः? और मेरी आँख खुल गई। मुरब्बी साहब ने उनको चित्र दिखाए, एल्बम दिखाया तो उन्होंने तुरन्त अपनी उंगली मेरे चित्र पर रख कर कहा और बार बार शपथ लेकर कहा कि इन्हीं को मैंने अपने घर में आसमान से उतरते देखा देखा था और इन्हीं के आने से मेरा घर प्रकाशवान हो गया था।

फिर गैम्बिया से अमीर साहब लिखते हैं कि एक गाँव में जब तबलीग़ की गई तो वहां हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के विषय में बताया गया और आपकी जमाअत में सम्मिलित होने के लिए बैअत की शर्तें पढ़कर सुनाई गईं तो गाँव के इमाम तथा गाँव के प्रगति संघ के चयर मैन ने तुरन्त कहा रसूलुल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम मेहदी के आने की भविष्य वाणी फ़रमाई थी और आज वे पहली बार इमाम मेहदी के आने के विषय में सुन रहे हैं और फिर सभी लोग जो लगभग तीन सौ पचास थे, बैअत करके अहमदियत में शामिल हो गए। जैसे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया है। यह दूसरी क़ुदरत ख़ुदा तआला द्वारा स्थापित की हुई है और उसके समर्थन के दृश्य हम देखते रहते हैं। अतः जो अपने ईमान में दृढ़ रहेंगे, वे निशान एंव समर्थन देखते रहेंगे। अतः अपने ईमानों को व्यापक करते रहें। अहमदिया ख़िलाफ़त के संग अपने सम्बंध को जोड़ें तथा इसके हक़ को

अदा करने की ओर ध्यान भी दें जिसका ख़ुदा तआला ने ख़िलाफ़त का पुरस्कार प्राप्त करने वालों से वादा फ़रमाया है। अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के द्वारा भय को शांति से बदलने का वादा फ़रमाया है परन्तु उन लोगों से जो अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले हों और पहला हक़ यह है कि يَعْبُدُوْنَنِى अर्थात मेरी इबादत करोगे। अतः यदि इस वरदान से लाभान्वित होना है तो अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करें। पाँच समय की नमाज़ों की रक्षा करें तथा सुन्दर रंग में अदा करने की ओर ध्यान दें। फिर फ़रमाया لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا अर्थात किसी वस्तु को मेरा शरीक नहीं बनाएंगे।

अतः यह ख़िलाफ़त के साथ प्रेम और आज्ञा पालन है जो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण कर रहा है और अच्छे परणिाम निकल रहे हैं। क्यूंकि यह अल्लाह तआला द्वारा स्थापित निज़ाम है इस लिए दीन की उन्नति के लिए हर एक प्रयास को उसने ख़िलाफ़त के साथ जोड़ दिया। अतः यदि किसी पदाधिकारी के मन में कभी आए अथवा स्वाभिमान उत्पन्न हो तो उसे इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान देना चाहिए। अतः अहमदिया जमाअत की प्रगति में न आलिमों का ज्ञान काम दे रहा है, न बुद्धिमानों की दक्षता काम दे रही है, न सांसारिक ज्ञान रखने वालों का ज्ञान व निपुणता काम दे रही है। यदि किसी दीन के आलिम, बुद्धिमान की बुद्धि, यदि किसी दुनियादार के ज्ञान की दक्षता, यदि निपुण लोगों की निपुणता जमाअत के कामों में अच्छे फल पैदा कर रहे हैं तो यह केवल और केवल अल्लाह तआला की कृपा तथा ख़िलाफ़त के संग रहने के कारण से है। क्यूंकि इस सम्बंध के कारण अल्लाह तआला का, इन परिणामों का वादा है और इसी कारण से वह प्रदान कर रहा है। दुनियादारों में अथवा दुनियादारी में निःसन्देह ज्ञान, बुद्धि तथा दक्षता काम दे सकते हैं परन्तु जमाअत में रहने वाले को अन्ततः उत्तम परिणामों के लिए, विशेष रूप से जमआत के कामों में स्वंय को ख़िलाफ़त का आज्ञाकारी करना होगा। इसी प्रकार आलिमों का भी यह दायित्व है कि वे लोग जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है अर्थात नए मानने वाले तथा नए नौजवान और बच्चे। उन्हें ख़िलाफ़त के साथ वास्तविक सम्बंध का, जिन्हें आभास नहीं है, तो वे उन्हें इससे अवगत कराएँ, इस विष्य में बताएँ। इसी प्रकार ओहदेदार भी उत्तरदायी हैं। यदि दीन की सेवा करने का अल्लाह तआला ने अवसर दे दिया है तो अपने दीन के ज्ञान को भी बढ़ाएँ तथा अपनी श्रद्धा एंव निष्ठा को भी बढ़ाएँ, अपने तक़वा को भी बढ़ाएँ। ख़लीफ़-ए-वक़्त की बातों को सुनो तथा उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करो। अपना सम्बंध ख़िलाफ़ के संग बढ़ाओ। जो लोग इस बात को समझते हैं वे अपनी हालतों में भी विशेष बदलाव अनुभव करते हैं।

यदि ये ओहदेदार ख़िलाफ़त के महत्व तथा सम्बंध को दृढ़ करने का प्रयास करेंगे, तो उन ओहदेदारों का महत्व स्वंय बढ़ जाएगा। अतः यह दायित्व है आलिमों का, इसमें सभी लोग शामिल हैं चाहे वे मुरब्बी हैं, ओहदेदार हैं अथवा दीन का ज्ञान रखने वाले हैं कि ख़लीफ-ए-वक़्त के हाथ पैर बनें। अपने कामों को भी ख़लीफ़-ए-वक़्त के आधीन करें तथा अन्य लोगों को भी उपदेश दें। जब ख़लीफ़ः जमाअत के सुधार के लिए कुछ कहे तो उसे लें और जमाअत के लोगों के सामने उसे दोहराएँ और दोहराएँ और दोहराएँ, यहाँ तक कि मंद से मंद बुद्धि का व्यक्ति भी समझ जाए और दीन के अनुसार उचित रूप से चलने का रास्ता पा ले।

अल्लाह तआला जमाअत के लोगों को भी तथा आलिमों एंव ओहदेदारों को भी यह तौफ़ीक़ दे कि ख़िलाफ़त की बातों को न केवल सुनने वाले हों बल्कि कर्म करने वाले जी हों। अल्लाह करे कि अल्लाह तआला की इच्छानुसार हम ख़िलाफ़त के पुरस्कार को संभालने वाले हों।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 29.05.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*